सकारात्मक सोच विकसित करने में मीडिया की पहल

(विशेष संदर्भ-प्रिंट मीडिया)

ROLE OF MEDIA IN DEVELOPING POSITIVE THOUGHT

(SPECIAL REFERENCE – PRINT MEDIA)

संचार एवं मीडिया अध्ययन केन्द्र में एम.फिल. उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र: 2014-15

शोधार्थी

रेशम

एम. फिल

पंजीयन सं 2014/05/208/015

संचार व मीडिया अध्ययन केन्द्र

मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

गाँधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र) , भारत

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

8-10

अध्याय एक : प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि 11-27

1.1: प्रस्तावना

1.2 : अध्ययन का क्षेत्र

1.3: शोध प्रश्न

1.4: शोध का उद्देश्य

1.5: शोध का महत्त्व

1.6: शोध की सीमाएं

1.7: उपकल्पना

1.8: साहित्य पुनरावलोकन

1.9:

अध्याय दो : समाचार की अवधारणा 28-53

2.1: समाचार का उद्भव एवं विकास

2.2: समाचार लेखन

2.3 :

अध्याय तीन : सकारात्मकता की अवधारणा 54-66

3.1: सकारात्मकता के विविध आयाम

3.2: मीडिया की सकारात्मक भूमिका

अध्याय चार : संचार का मनोविज्ञान **67-93**

4.1: संचार और मनोविज्ञान

4.2: संचार के मनोविज्ञान द्वारा जनमत निर्माण

4.3: संचार का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त

4.4: खबरों

अध्याय पाँच : सकारात्मक सोच विकसित करने में प्रिंट मीडिया की पहल **94-115**

5.1: दैनिक भास्कर अखबार की पहल

5.2: हिन्दुस्ता

अध्याय छ: : सकारात्मक व नकारात्मक खबरों का पाठकों पर प्रभाव **116-137**

6.1: उत्तरदाताओं का व्यक्तिगत विवरण एवं विश्लेषण

6.2: प्रश्नावली विश्लेषण

6.3: प्रायोगिक अध्य

अध्याय सात :

निष्कर्ष एवं सुझाव **138-143**

परिशिष्ट **144-153**

संदर्भ ग्रन्थ **154-156**

भूमिका

भूमिका

"शेक्सपियर ने बहुत ही अच्छी बात कही है – " केवल विचार ही किसी को अच्छा या बुरा बनाते हैं। सकारात्मक सोच विकसित करने के लिए किसी तरह की साधना की जरूरत नहीं बस थोड़े से विचार की जरूरत है । "

नैतिक तथा सदाचारी मूल्यों को बनाए रखने और समाज के चारित्रिक विकास मे मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। हमारी जीवन दृष्टि जैसी होगी हमें दूसरे लोग वैसे ही दिखाई देंगे । मीडिया ऐसे कार्यों को बढ़ावा दे रही है जो आम जन में मूल्यों का विकास कर सके। मीडिया के इन्हीं आदर्शों में विश्व कल्याण की भलाई छिपी हैं । मीडिया द्वारा ऐसे कार्यक्रम किए जा रहे हैं जिससे जनता के सभी वर्गों में सकारात्मक्ता का विकास हो । क्रांतिकारी विचारक ओशो की यह सीख पत्रकारों को याद रखनी चाहिए जिसमे उन्होने कहा था कि अशुभ खबर नही छापनी चाहिए, उसकी जहाँ तक हो उपेक्षा होनी चाहिए। मीडिया का काम है लोगों को सकारात्मक दिशा की ओर ले जाना। लोग केवल हत्या और बलात्कार नहीं करते ,प्रेम भी करते हैं लेकिन उसे स्थान नहीं मिलता, मानो कि बलात्कार प्रेम से अधिक महत्वपूर्ण है। उधर न्यूयॉर्क टाइम्स की वह पुरस्कृत परिभाषा जिसमे कहा गया है कि ***आल बैड थिंग्स इज ए गुड न्यूज***अर्थात सारी बुरी बातें एक अच्छा समाचार हैं। शायद यही मीडिया का मूल मंत्र बन गया है ओर लोगो की आदत भी । परिवेश और वातावरण मनुष्य के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करते हैं । वस्तुत: यह मनुष्य को एक नए मनुष्य मे बदलने की सतत प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया का महत्वपूर्ण हिस्सा मीडिया है । मीडिया मनुष्य की चेतना को खाद डालता है ,उसे पोषित करता है और सामाजिक चेतना को अग्रगामी बनाता है । आज मीडिया का विस्तार हो रहा है ,वह आधुनिकता और बाजारवाद से जूझ रहा है । ऐसे बाजारीकरण के दौर मे मीडिया द्वारा सकारात्मक खबरों की पहल अपने आप मे प्रशसंनीय है और यह अवश्य ही मीडिया की खोती हुई विश्वसनीयता को वापस ला पाएगा ,ऐसी उम्मीद की जा सकती है ।

गाँधी की पत्रकारिता इस विषय पर अत्यधिक सटीक बैठती है क्योंकि गाँधीजी ने अपनी लेखनी से समाज में सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक एकता व चेतना का संचार किया, समाज को प्रेरित किया ताकि वह अपने लक्ष्य के प्रति सजग रहे तथा अपने अधिकारों को पाने के लिए लड़ने का हौसला रखे । गाँधीजी ने एक

व्यवसाय के रूप में पत्रकारिता के स्तर को व्यापक रूप से प्रभावित किया। उन्होंने देश के विभिन्न मीडिया संस्थानों को प्रेरित किया कि वे निडर रहें और सकारात्मक खबरों को अधिक से अधिक बदावा दें जो देश के विकास एवं समाज को सही दिशा देने के लिए आवश्यक है। गाँधीजी एक ऐसे पत्रकार थे जो समाचार पत्र को व्यावसायिक दृष्टि से नहीं, बल्कि जन-उन्मुख दृष्टि से देखते थे और आज के पत्रकारों को भी गांधीवादी दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, तभी मीडिया समाज को सकारात्मक दिशा दे पाने में सफल प्रयास कर पाएगी।

पत्रकारिता का लक्ष्य केवल समाज को सही दिशा देना होना चाहिए। ऐसे में यदि अखबारों मे प्रकाशित खबरों के कांसेप्ट को देखें तो ऐसी खबरों को बॉटम लाइन मे प्रकाशित करने का चलन रहा है। इसके पीछे खबरों को पढ़ने और पढाने का एक मनोविज्ञान भी रहा है । ऐसा माना जाता है कि जब पाठक सुबह अखबार पढ़ता है और ऊपर मे हार्ड न्यूज पढ़ता है तो उसके दिमाग में एक किस्म का तनाव उत्पन्न होता है , लेकिन जब वह नीचे आकर बॉटम लाइन मे जाता है और उसे कोई प्रेरक खबर मिलती है तो इससे एक उम्मीद और ऊर्जा का संचार होता है। इसे पत्रकारिता की भाषा में बॉटम स्टोरी या एंकर स्टोरी भी कहते हैं। अभी दैनिक भास्कर, हिंदुस्तान, इंडियन एक्स्प्रेस, प्रभात खबर आदि अखबारों और विभिन्न पत्रिकाओं में ऐसी खबरें देखने को मिलती हैं जो कि समाज एवं एक निश्चित पाठक वर्ग को सकारात्मक सोच एवं ऊर्जा देती हैं। पत्रकारिता का कर्म या यूं कहे कि पत्रकारों के पास कलम की ताकत होती है और यह इतनी तीक्ष्ण व ताकतवर होती है कि एक शस्त्रधारी भी उसके समक्ष हथियार डालने के लिए विवश हो जाता है। हमे पहचानना होगा कि हम इस कलम की शक्ति का उपयोग किस परिणाम के लिए कर रहे हैं। यही मुख्य विचारणीय बिन्दु है। पत्रकारिता का यह कर्म है कि नकारात्मक माहौल में सकारात्मक ऊर्जा का संचार कैसे हो यानि नकारात्मक माहौल को किस तरह सकारात्मक माहौल मे बदलें। मीडिया द्वारा इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए लगातार प्रयत्न किए जा रहे हैं।

मीडिया की भूमिका समाज परिवर्तन मे सदा रही है । प्रेस के लक्ष्य समाज के लक्ष्य ही थे और उन लक्ष्यों को पाने के लिए मीडिया ने निरंतर प्रयास भी किया है। शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, सिंचाई व जनजीवन से जुड़ी सभी समस्याओं को मीडिया के द्वारा सामने लाया जाता रहा है , जिससे एक प्रकार का सकारात्मक माहौल बना और सकारात्मक दिशा मे काम करने मे एक तेजी दिखाई दे रही है। इस तरह सकारात्मक समाचार का एक बड़ा फायदा यह हुआ कि ऐसे लोगों के काम मे उभार आया जो सकारात्मक सोच रखते हैं और युवा पीढ़ी में लगातार उत्साह देखने को मिल रहा है , जिससे वे सकारात्मक कार्य करने की प्रेरणा पाते हैं।

अध्याय एक
प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि

1.1 : प्रस्तावना

1.2 : अध्ययन का क्षेत्र

1.3 : शोध प्रश्न

1.4 : शोध का उद्देश्य

1.5 : शोध का महत्त्व

1.6 : शोध की सीमाएं

1.7 : उपकल्पना

1.8 : साहित्य पुनरावलोकन

1.9 : शोध प्रविधि

1.1 प्रस्तावना

सकारात्मक खबरों के प्रति समाज का रूझान बढ़े, लोगो में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो सके इस ओर मीडिया द्वारा लगातार की जाने वाली पहल को और अधिक विस्तार की आवश्यकता है। मीडिया को समाज के सामाजिक, व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में आध्यात्मिक ज्ञान, मूल्यों, सकारात्मक सोच और स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करने के लिये अभी बहुत से प्रयास करने की आवश्यकता है। चूंकि समाज में व्याप्त नकारात्मक माहौल से निकलने का एकमात्र यही उपाय है। मीडिया को नकारात्मक समाचारों , लेखों व अन्य इस तरह की सामग्री के प्रकाशन व प्रसारण को रोकना होगा जिसके माध्यम से समाज ही नहीं अपितु पूरे विश्व में व्याप्त नकारात्मकता का अन्त किया जा सकता है। मीडियाकर्मियों द्वारा मीडिया को केवल एक व्यवसाय के रूप में देखने की दृष्टि में परिवर्तन लाना आवश्यक है तभी यह सब सम्भव हो पाएगा। इसके लिए विभिन्न मीडिया घरानो को पत्रकारिता के नैतिक सिद्धान्तों एवं मूल्यों को अपनाना होगा और मीडिया ने इन मूल्यों को ध्यान में रखते हुए अपने दायित्वों का निर्वहन किया भी है , जिसका परिणाम है कि आजादी से लेकर अब तक अपनी निष्पक्षता और विश्वसनीयता को बनाए रखा। हालांकि पिछले 15 वर्षों में मीडिया के स्वरूप में बहुत तेजी से बदलाव देखने को मिला है। सूचना क्रांति एवं तकनीकी विस्तार के चलते मीडिया की पहुँच व्यापक हुई है। इसके समानांतर भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं बाजारीकरण की प्रक्रिया में तेजी हुई है , जिससे मीडिया भी अछूता नहीं है। नए-नए अखबार, नई-नई पत्रिकाएं निकाली जा रही हैं। अत: मीडिया के इस विस्तार के साथ चिंतनीय पहलू का जुड़ना कि क्या मीडिया इन सब के बीच अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन कुशलता पूर्वक कर पाएगी, लाजमी है। चूंकि भारत में मीडिया की भूमिका विकास एवं सामाजिक मुद्दों से अलग हटकर हो ही नही सकती। मीडिया को खबरो में शिक्षा, स्वास्थ, सरकारी योजनाओं, समाज से जुड़ी सकारात्मक खबरें, रोजगार आदि को स्थान देना ही होगा। आज समाज का हर पाठक वर्ग इतना अधिक जागरूक है कि मीडिया ने इस ओर अपने कदम तेजी से बढ़ाए भी हैं और विभिन्न मीडिया संस्थानो द्वारा इस तरह की खबरों के लिए प्रयासरत रहना समाज के सकारात्मक सोच को दर्शाता है।

प्रस्तुत शोध विषय ***सकारात्मक सोच विकसित करने में मीडिया की पहल (विशेष संदर्भ प्रिंट मीडिया)*** के अन्तर्गत विभिन्न अध्यायों के माध्यम से समाचार की बदलती रूपरेखा, सकारात्मकता का बोध

कराने वाली पत्रकारिता पर विशेष बल दिया गया है। चूंकि मीडिया को लोकतन्त्र का चौथा स्तंभ माना जाता है और उसमे जनसमूह की मानसिकता को पूरी तरह परिवर्तित करने की ताकत है और यदि इस ताकत का सकारात्मक प्रयोग किया जाए तो अवश्य ही व्यक्ति की सोच व विचार में सकारात्मक परिवर्तन होगा और समाज को सही दिशा मिलेगी। इन सभी विषय वस्तुओं को ध्यान में रखते हुए निम्न अध्यायों का विश्लेषण किया गया है

प्रथम अध्याय-

इस अध्याय का शीर्षक - " प्रस्तावना एवं शोध प्रविधि " जिसमें मीडिया की भूमिका सकारात्मक पहलू को देखते हुए तैयार की गई है। शोध कार्य के उद्देश्य एवं उसके महत्व पर केन्द्रित हो कर शोध कार्य किया जा रहा है जिसके लिए पटना शहर के दैनिक अखबार दैनिक भास्कर और हिन्दुस्तान का चयन किया गया है। इसके साथ ही विभिन्न उपकल्पनाओं का निर्माण किया गया है जो कि शोध की गुणवता मापन में आगे सहायक होंगी

द्वितीय अध्याय-

" समाचारों की अवधारणा " द्वितीय अध्याय का शीर्षक है। इसके अन्तर्गत लगातार चली आ रही समाचारों की रूपरेखा, उसकी लेखन शैली का विस्तृत वर्णन है। व्यक्ति के जीवन में समाचार का कितना अधिक महत्व है, इस पर भी प्रकाश डाला गया है। विभिन्न लेखकों एवं विद्वानों की समाचार के प्रति जो राय बनती है उसकी विस्तृत व्याख्या इस अध्याय में की गई है। चूंकि समाचार एक ऐसा माध्यम है जो व्यक्ति के जीवन से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा है ऐसे में उसकी अनिर्वायता स्वीकृत है

तृतीय अध्याय-

तृतीय अध्याय का शीर्षक - " संचार का मनोविज्ञान "। इस अध्याय के अंतर्गत संचार के विभिन्न अंगों के मनोवैज्ञानिक पक्ष को रखा गया है। संचार का मनोवैज्ञानिक पक्ष किस प्रकार जनमत निर्माण में सहायक होता है और किस प्रकार एक खबर प्रोपोगैण्डा में तब्दील हो जाती है, इस अध्याय में इसका भी वर्णन है। संचार

के मनोवैज्ञानिक सिद्धांत का विस्तृत वर्णन करते हुए पाठकों पर खबरों का मनोवैज्ञानिक प्रभाव सकारात्मक एवं नकारात्मक तौर पर किस प्रकार होता है, इसका भी आकलन इस अध्याय में किया गया है

चतुर्थ अध्याय-

'' सकारात्मकता की अवधारणा '' इस अध्याय का शीर्षक है। इस अध्याय में व्यक्ति के सोचने की क्षमता के सकारात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन किया गया है। किस तरह व्यक्ति विशेष में सकारात्मक ऊर्जा का संचार हो इसे ध्यान में रखते हुए सकारात्मकता के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। इसके साथ ही नकारात्मक विचारों को जीवन से किस तरह दूर किया जाए इसके उपाय भी सुझाए गए हैं तथा खबरों की सकारात्मकता को मानव व्यवहार से जोड़ने का प्रयत्न भी इस अध्याय में किया गया है

पंचम अध्याय-

इस अध्याय का शीर्षक - " सकारात्मक सोच विकसित करने में प्रिंट मीडिया की पहल "। इस अध्याय में दैनिक भास्कर और हिन्दुस्तान अखबार के चयनित सकारात्मक खबरों का विस्तृत विश्लेषण किया गया है , जिसके माध्यम से सकारात्मक खबरों का पाठकों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है, इसका अध्ययन किया गया है। इसके साथ ही इस अध्याय में दैनिक भास्कर और हिन्दुस्तान अखबार के इतिहास पर भी सरसरी नजर डाली गई है

षष्ठ अध्याय-

" सकारात्मक एवं नकारात्मक खबरों का आम पाठकों पर प्रभाव " इस अध्याय का शीर्षक है। इस अध्याय में प्रायोगिक अध्ययन के माध्यम से खबरों का पाठकों पर पड़ रहे प्रभाव का मनोवैज्ञानिक अध्ययन किया गया है , जिसे ग्राफ के माध्यम से दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त खबरों के प्रति लोगों की रुचि एवं जागरुकता को जानने के लिए प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया गया है जो पाठकों पर पड़ रहे प्रभाव को सरलता से दर्शाती है ।

सप्तम् अध्याय-

निष्कर्ष एवं सुझाव-

विभिन्न अध्यायों पर कार्य करने के उपरान्त इस अध्याय में शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि मीडिया सकारात्मक सोच विकसित करने की दिशा में सही जा रहा है और इससे सबसे अधिक प्रभावित युवा वर्ग हो रहा है। हम सभी जानते हैं कि हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार मीडिया के भी सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पक्ष हैं। ऐसे में आज के तनावपूर्ण माहौल में यदि समाचार पत्र खबरों के माध्यम से पाठकों को मानसिक सुकून और समाज को सही दिशा की ओर अग्रसर करने में सहायक हो तो माना जा सकता है कि मीडिया अपने दायित्वों का निर्वहन कर रही है। ऐसे में सकारात्मक खबरों के माध्यम से पाठकों में नई ऊर्जा एवं सकारात्मक सोच का विकास हो रहा है। इसे देखते हुए यह सुझाव दिया जा सकता है कि मीडिया को इस ओर अपने कदम आगे बढाने चाहिए जिससे कि भारत विकासशील देशों की श्रेणी से निकलकर विकसित देशों की कतार में खड़ा हो जिसमें मीडिया की भूमिका अहम मानी जाए

शोध मे प्रयुक्त शब्दावलियाँ

मूल्य : वास्तव मे मूल्यों का स्वरूप एक पिरामिड के आकार का होता है , जिसके शीर्ष पर सत्य ,प्रेम और आंतरिक शांति जैसे आध्यात्मिक मूल्य स्थित होते हैं ,दूसरे स्तर पर नैतिक मूल्य स्थित होते हैं जिन्हें समाज के विद्वानों ने परिभाषित किया है । तीसरे स्वरूप को भौतिक मूल्यों ने घेर रखा है जो हमारे सुख ,शांति ,भोग –

अध्यात्म : मनुष्य मे उच्च चेतना का विकास करने वाली भावनाएँ

सकारात्मक खबरें : ऐसा समाचार जिससे पाठकों को मानसिक सुकून मिलता है तथा इससे उनमे एक उम्मीद व ऊर्जा का संचार होता है

सकारात्मक्ता : सकारात्मक्ता से मतलब मनुष्य की ऊर्जा का सही दिशा मे लगना और नकारात्मक्ता से दूर करने की प्रक्रिया है।

विकास : विकास से अभिप्राय मनुष्य के सामाजिक , आर्थिक ,राजनैतिक ,शारीरिक अर्थात समाज के सर्वांगीण विकास से है

संचार : मनुष्य के कार्य क्षेत्र, विचारों व भावनाओं के प्रसारण व आदान-प्रदान की प्रक्रिया संचार है

नकारात्मकता : नकारात्मकता से अभिप्राय ऐसे विचारों से है जो लोगो में कुण्ठा, द्वेष, और मानसिक अंशाति का विस्तार करती है

1.2 अध्ययन का क्षेत्र

प्रस्तुत शोध विषय ***सकारात्मक सोच विकसित करने में मीडिया की पहल (विशेष संदर्भ प्रिंट मीडिया)*** के तहत पटना शहर के 'दैनिक भास्कर' एवं 'हिंदुस्तान' अखबार के अप्रैल से जुलाई 2015 तक के संस्करणों का अध्ययन किया गया है जिसके अंतर्गत मीडिया द्वारा समाज में व्याप्त नकारात्मकता, भ्रष्टाचार के विरूद्ध शुरू किए गए सकारात्मक शुरूआत का अध्ययन भी किया गया है। इसके अंतर्गत विभिन्न मीडिया विशेषज्ञों की राय को शामिल किया जा रहा है जिसके माध्यम से मीडिया के नकारात्मक पहलू के साथ-साथ उसके सकारात्मक पक्ष को भी उजागर किया जा रहा है

1.3 शोध प्रश्न

पाठकों पर मीडिया द्वारा की गयी सकारात्मक पहल का क्या प्रभाव पड़ रहा है ?
क्या सकारात्मक खबरों के माध्यम से लोगों की मानसिकता में बदलाव आ रहा है ?
क्या मीडिया के इस प्रयास से समाज मे कुरीतियाँ कम हुई हैं ?
क्या विभिन्न मीडिया संस्थानों द्वारा किया गया यह प्रयास भविष्य मे भी ?

1.4 शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध विषय ***-सकारात्मक सोच विकसित करने में मीडिया की पहल (विशेष संदर्भ –प्रिंट मीडिया)*** *के निम्नलिखित उद्देश्य हैं –*

मीडिया के इस बदलते हुए सकारात्मक स्वरूप को जानना।

मीडिया द्वारा की गयी सकारात्मक पहल के माध्यम से आम लोगो में मानवीय मूल्यों का विकास करना।

मीडिया के इस सकारात्मक बदलाव को आम जन के विकास से जोड़ना।

मीडिया की सकारात्मक पहल से पाठकों को पवित्र एवं उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करना।

पाठकों के मनमस्तिष्क में निर्भीकता, साहस व स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना।

पाठकों में सकारात्मक समाचार की समझ विकसित करना।

सकारात्मक खबरों द्वारा पाठकों में नकारात्मक विचारों के प्रभाव को कम करना।

सकारात्मक खबरों के प्रति मीडिया द्वारा की गई पहल का आकलन करना

1.5 शोध का महत्व

जहां अखबारों में सनसनीखेज घटनाओं और वयक्तिपरक, चरित्रहनन जैसे समाचारों को विशेष महत्व दिया जाता है – ***"सकारात्मक सोच विकसित करने में मीडिया की पहल"*** के माध्यम से आम पाठकों के मन मे सकारात्मक विचारों का विकास होगा।

इस शोध के द्वारा पाठकों मे नये जोश, नई ऊर्जा, नई उमंग तथा नई रोशनी का संचार होगा।

इस शोध के माध्यम से पाठकों के मन से नकारात्मकता का ह्रास होगा।

इस शोध के माध्यम से समाज मे सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा।

इस शोध के माध्यम से न सिर्फ पाठकों के मन मे सकारात्मकता का विकास होगा बल्कि पत्रकारों मे भी

1.6 शोध की सीमाएं

मीडिया को समाज का आईना माना जाता है और आज मीडिया के द्वारा जो सकारात्मक सोच को विकसित करने की पहल मे तेजी आ रही है ऐसे मे लगभग सभी मीडिया घरानों ने इस ओर अपने कदम बढ़ाए हैं। फिर चाहे वह प्रिंट मीडिया हो या इलेक्ट्रोनिक मीडिया, न्यू मीडिया हो या परंपरागत मीडिया हो , इसके विस्तार को देखते हुए हमने शोध की कुछ सीमाएं तय की हैं, जिसके लिए पटना शहर के दैनिक भास्कर और

हिंदुस्तान के अप्रैल से जुलाई तक के चार महीनों के समाचारपत्र लिए गये हैं। इसके माध्यम से पाठकों पर पड़ रहे प्रभाव को जानने का प्रयत्न किया गया है।

शोध क्षेत्र	:-	पटना शहर
अखबार का चयन	: -	दैनिक हिंदुस्तान, पटना संस्करण
		दैनिक भास्कर, पटना संस्करण
प्रभावशीलता	: -	100 प्रश्नावली एवं
		15

1.7 उपकल्पना :-

लुईस ए एलन ने कहा है कि ***' ज्ञात तथ्यों के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर भावी दर्शन का व्यवस्थित प्रयास करना ही पूर्वानुमान है।'*** *प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित उपकल्पनायें बनाई गयी हैं -*

सकारात्मक सोच विकसित करने मे मीडिया अहम भूमिका अदा करता है ।

मीडिया इस पहल के द्वारा समाज में सकारात्मक सामाजिक बदलाव कर रहा है ।

सकारात्मक खबरें पाठकों को सही दिशा प्रदान करती हैं।

मीडिया का यह स्वरूप लोगों को उच्च लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रोत्साहित करता है ।

मीडिया सकारात्मक खबरों के माध्यम से आम जन के मनमस्तिष्क में निर्भीकता, साहस व क्षमता विकसित कर रही है

1.8 साहित्य का पुनरावलोकन

मुस्तफा, सीमा. (2013), जर्नलिज़्म एथिक्स एंड रिसपोंसबिलिटि. नई दिल्ली: हर आनंद पब्लिकेशन.

लेखिका ने अपने पेशेवर रवैये और सत्यनिष्ठा के वरिष्ठ पत्रकारों और दिग्गजों द्वारा मीडिया के बहुआयामी और उनके समझ आने वाली समस्याओं और चुनौतियों पर प्रकाश डाला है। इसके साथ ही ऐसे सुझाव दिये गए जिनकी मदद से मीडिया की विश्वसनीयता एक बार फिर से कायम की जा सके और मीडिया को सकारात्मकता की ओर प्रेरित किया जा सके। पुस्तक मे बढ़ते निगमीकरण की चुनौती की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया है जिसकी

वजह से मीडिया एक बड़े उद्योग मे तब्दील हो रही है , ऐसे मे मीडिया को उसके लक्ष्य के प्रति अत्यधिक सजग होने की जरूरत महसूस की जा रही है

गौर ,संजय. (2012), द बेन ऑफ इथिकल जर्नलिज़्म. जयपुर : यीकिंग बुक्स.

पुस्तक में मुख्य रूप से यह तर्क दिया गया है कि उदारीकरण व बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन से भारत जैसे देश मे मीडिया हित साधन का यंत्र बनता चला गया है। संजय गौर ने मीडिया तथा उसके सामाजिक दायित्वों की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयन्त किया है। चूंकि मीडिया अपनी नैतिकता से परे यदि कोई कार्य करता है तो उसे सामाजिक हित मे कम और मीडिया के हित साधन के रूप में अधिक देखा जाता है । ऐसे मे

आहूजा , बी. एन. (1979), थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ जर्नलिज़्म. नई दिल्ली : सुरजीत पब्लिकेशन.

लेखक ने आम पाठकों एवं दर्शकों को आगाह करते हुए लिखा है कि मीडिया अपने प्रचार प्रसार को बढ़ाने के लिए अपनी सही दिशा से परिवर्तित हो जाती है। ऐसे मे हमे अर्थात आम जनता को मीडिया के दायित्वों से उन्हें अवगत कराते रहना चाहिए। यह हमारा कर्तव्य है कि हमारी मीडिया का सकारात्मक विस्तार हो सके। चूंकि मीडिया का सकारात्मक विस्तार तभी संभवहै जब हम और आप मिलकर इस दायित्व को पूरा

किशोर ,देवेश. (1998), ईफ़ेक्टिव कम्युनिकेशन . नई दिल्ली: हर आनंद पब्लिकेशन.

इस पुस्तक मे लेखक ने मीडिया को सबसे सशक्त माध्यम बताते हुए कहा है कि मीडिया का काम है हमे संतुलित करना , हमे सजग बनाना ,हमारा विकास करना और एक बेहतर समाज के निर्माण के लिए तत्पर रहना। मीडिया द्वारा समाज मे एक नई ऊर्जा भरने की जरूरत है

प्रभु ,आर. के. (2011), मेरे सपनों का भारत. अहमदाबाद : नवजीवन प्रकाशन मंदिर.

इस पुस्तक मे लेखक यह बताता है कि समाचार पत्र एक ज़बरदस्त शक्ति है , किन्तु जिस प्रकार निरंकुश पानी का प्रवाह गाँव के गाँव डुबा देता है उसी प्रकार निरंकुश कलम का प्रवाह भी सर्वनाश कि सृष्टि करता है ।

आधुनिक पत्रकारों की कला मे गहराई का अभाव , विषय का कोई एक पक्ष ही पेश करना , तथ्यों के वर्णन मे भूल और अक्सर बेईमानी के दोष आ गए हैं, ऐसे मे वे लगातार समाज को गुमराह करते हैं

कुमार ,संतोष. (2008), पत्रकारिता और समाज. नई दिल्ली : ओमेगा पब्लिकेशन.

पत्रकारिता जनसेवा का सशक्त माध्यम है और आज के युग मे इसकी महत्ता दिन –प्रतिदिन और बढ़ गयी है। आज की परिस्थिति यह है कि हमारा मन ऐसे किसी समाज की कल्पना भी नही कर सकता जिसमे पत्रकारिता का अस्तित्व न हो। मनुष्य को जीवित रहने हेतु जिस प्रकार भोजन ,हवा ,पानी बहुत ही आवश्यक है ठीक उसी प्रकार मानसिक तृष्णा की पूर्ति हेतु पत्र –पत्रिकाएं जरूरी हो गयी हैं। चूंकि यह अब मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं मे शामिल है तो इसका समाज के प्रति कर्तव्य और अधिक बढ़ जाता है

डॉ. जैन , रमेश. (1997), समाचार सम्पादन और पृष्ठ- सज्जा. जयपुर : राजस्थान प्रकाशन.

लेखक यह कहता है कि पत्रकारिता मे व्यापक परिवर्तन हो चुके हैं। आज पत्रकारिता कागज़ और प्रेस तक सीमित न रहकर अंतरिक्ष तक मे प्रवेश कर चुकी है ,उपग्रह संस्करण इस कथन के संकेतहैं । ऐसे मे आज हर दिन पत्रकारों को कुछ नया और बेहतर करने की जरूरत है जो समाज को सही दिशा दे सके और समाज की ज़रूरत है

मानस, मुकेश. (2011), मीडिया लेखन सिद्धांत और प्रयोग. नई दिल्ली : स्वराज प्रकाशन.

लेखक का मानना है कि मीडिया का विस्तार लगातार हो रहा है और हमारी आज की पीढ़ी निष्क्रिय होती जा रही है। पढ़ने और लिखने की प्रक्रिया का अभाव देखने को लगातार मिल रहा है। हमे अपनी कार्यशैली का विस्तार करना होगा तभी मीडिया का सही

हीगंड, आशा व जैन, मधु. (2009), संचार के सिद्धान्त. जयपुर : राजस्थान हिंन्दी ग्रन्थ अकादमी.

लेखकों का यह मानना है कि वर्तमान विश्व की समृद्धि एवं प्रगति का मुख्य आधार संचार ही है। वर्तमान विश्व की व्यापक जनसंख्या, समस्त राष्ट्रों और समुदायों को एकसूत्र में बांधने वाला उपकरण संचारहै। लेखकों ने बहुत ही सहज भाव व तर्कपूर्ण ढ़ग से बताया है कि संचार एक तकनीकी प्रक्रिया ही नहीं, अपितु सामाजिक एवं

मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति भी है। इस पुस्तक मे संचार के मनौवैज्ञानिक सिद्धान्तों पर वर्णनात्मक प्रकाश डाला गया है

डॉ. सिंह, अशोक प्रताप. (2013), व्यावहारिक मनोविज्ञान. नोएडा : पियरसन.

यह पुस्तक सामान्य मनोविज्ञान के नियमों एवं सिद्धांतों का जीवन के विभिन्न क्षेत्रो में उपयोग को दर्शाता है। उनका कहना है कि व्यावहारिक मनोविज्ञान की मुख्य रूप से पहचान औद्योगिक और व्यावसायिक क्षेत्र में मनोविज्ञान के नियमों के उपयोग से है। मानव प्रकृति एवं उनके व्यवहारों के वैज्ञानिक अध्ययन के क्षेत्र में व्यावहारिक मनोविज्ञान ने संचार से जोड़कर व्यवहार के अध्ययन को बताया है

पील, नॉर्मन विन्सेन्ट. (2015), सकारात्मक सोच की शक्ति. भोपाल : मंजुल पब्लिशिंग हाउस.

नॉर्मन विन्सेन्ट पील की यह पुस्तक अंग्रेजी का हिन्दी रूपांतरण है जिसमें उन्होने व्यक्ति विशेष की मानसिकता पर बल देते हुए कहा है कि किसी व्यक्ति द्वारा सम्पूर्ण समाज का संचालन उसकी बौद्धिक स्थिति पर निर्भर करता है। सकारात्मक सोच किसी व्यक्ति विशेष, सम्प्रदाय विशेष, समाज या सम्पूर्ण विश्व के लिए ही बहुत महत्त्वपूर्ण है चूंकि उस पर पूरा विकास क्रम निर्भर करता है। व्यक्ति यदि सकारात्मक सोच लेकर आगे बढ़े तो सफलता मिलनी निश्चित होती है। सकारात्मक सोच में इतनी शक्ति है कि वह मूर्त शरीर में भी जान डाल दे। इसका प्रमाण है कि पत्थर की मूर्ति को हम भगवान मानते हैं

शुक्ल, प्रवीण. (2011), गाँधी और मैनेजमेंट. नई दिल्ली : डायमंड पॉकेट बुक्स.

प्रवीण शुक्ल द्वारा लिखित पुस्तक ***गाँधी और मैनेजमेंट*** मे प्रबंधन की आवश्यकता को हर क्षेत्र के लिये महत्वपूर्ण बताया गया है। गाँधीजी एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखने वाले व्यक्ति थे। उनका कहना था कि एक सफल व्यक्ति बनने के लिए अपने अन्दर सकारात्मक गुणों का विकास करना परमावश्यक है। हमें अपना सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में गाँधी जी की नीतियों और उनके विचारों से व्यापक रोशनी और जीवन दृष्टि मिलती है। उनका मानना था कि सकारात्मकता, श्रेष्ठ विचारों और सही दिशा में कार्य करने से विकसित होती है। यदि समाज में सभी एक दूसरे के साथ मित्रभाव से रहें तो सकारात्मकता का विकास स्वयं होगा। चूंकि

कुरीतियो की बेड़ी से जकड़ी व्यवस्थाओं को तोड़कर आप न केवल वर्तमान, बल्कि आगे आने वाली कई पीढियो को फायदा पहुँचाते हैं अतएव हमें यह याद रखना होगा कि बुराईयों का अन्त करने के लिए किसी एक न एक को आगे आना ही होगा

सिंह, जोगिन्दर. (2005), पॉजिटिव थिंकिंग (सफलता व सूत्र) . नई दिल्ली : डायमंड बुक्स.

जोगिदार सिंह कहते हैं कि जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होने का मात्र एक सूत्र है 'सकारात्मक सोच'। यानि वह यह भी मानते हैं कि यह थोड़ा कठिन है। चूँकि सामाजिक परिवेश मे जहां लगातार आपस में मनमुटाव, आपसी द्वन्द, हिंसात्क प्रवृत्ति फैली हुई है, इन सब के बीच अपने आप को पॉजिटीव रखना बेहद कठिन हैं। परन्तु सामाजिक व्यवस्था को सुधारने, स्वयं के विकास के साथ-साथ राष्ट्र के व्यापक विकास के लिए यह

अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि जहां तक हो हम पॉजिटिव रहें, पॉजीटिव दिखेँ ,पॉजिटीव सोचें और पॉजिटीव प्रतिक्रिया दें

सरश्री. (2014), विचार नियार (द पॉवर ऑफ हैप्पी थॉट्स). पुणे : तेजज्ञान ग्लोबल फाउंडेशन.

इस पुस्तक का लेखन अत्यन्त सरल है जिसमें साधारण शब्दो में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति सुबह उठकर सबसे पहले जो भी काम करे , अच्छा करे। उनका मानना है कि पहली चीज हर मनुष्य के दिमाग में यह आनी चाहिए कि हम जो भी कार्य कर रहे हैं , उससे अगर किसी की भलाई न हो तो किसी की बुराई भी न हो। इस पुस्तक की सबसे बड़ी खासियत यह है कि कोई भी व्यक्ति अपने अन्दर सकारात्मक भाव व विचार कैसे उत्पन्न कर सकता है इसके भी उपाय सुझाए गए हैं। शब्दों की कीमत अधिक है अत: एक एक शब्द का प्रयोग किसी की उन्नति या विकास के लिए इस्तेमाल करें। क्योंकि हम जैसा बोलते हैं वैसे हमारे विचार हो जाते हैं। हमारा एक सकारात्मक विचार विश्व को नई दिशा दे सकता है, इसलिए मनुष्य को सदैव आशावादी होना चाहिए

पंत, नवीन चन्द्र. (2004), समाचार लेखन एवं संपादन. नई दिल्ली : कनिष्का पब्लिशर्स.

यह पुस्तक मुख्य रूप से समाचार लेखन, संपादन, सज्जा, समाचार पत्रों की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डालते हुए उसके भविष्य के प्रति पाठकों का ध्यान आकर्षित करती है। लेखक का यह मानना है कि समाचार पत्र वर्तमान इतिहास के मुख्य अधिवक्ता का कार्य करता है और अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए समस्त महत्त्वपूर्ण घटनाओं की एक संतुलित तथा सुव्यवस्थित रूपरेखा जनता के सामने प्रस्तुत करता है। लेखक ने वर्तमान समय के समाचार पत्रों की हो रही निरंतर प्रगति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए बताया है कि प्रारम्भ मे समाचार पत्रों की स्थिति अत्यधिक दयनीय थी। समाचार पत्रों ने किस प्रकार प्रगति का मार्ग प्रशस्त किया है यह पाठकों को इस पुस्तक के माध्यम से बताया गया है

मेहता,आलोक. (2008), पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा. नई दिल्ली : सामयिक प्रकाशन.

आलोक मेहता ने पुस्तक ***पत्रकारिता की लक्ष्मण रेखा*** के माध्यम से, पत्रकारिता के विभिन्न भागों में जो सीमाएं तय की गई उस पर प्रकाश डाला है। उसके साथ ही अखबारों की बदलती रूपरेखा पर भी प्रकाश डाला है। उनका कहना है कि अखबार की विश्वसनीयता और संपादक की भूमिका को लेकर निरंतर बहस होती रही है और अखबार अब उत्पाद के रूप मे परिवर्तित हो रहा है। संवाददाता या संपादक को अपनी खबरों को लेकर बहुत संवेदनशील नहीं होना चाहिए। चूंकि यह केवल नाक का सवाल नही समाज के हित, जानकारी और विकास से जुड़ा होता है। लेखक का मानना है कि जो नियम कानून या सीमाएं तयहैं प्रत्येक संस्थान व कर्मियों को इन नियमों व सीमाओं मे रहकर ही कार्य करना चाहिए। अर्थात लेखक का मानना है कि पत्रकारिता की कुछ सीमा रेखा है जिसका उल्लघंन किसी पर भी भारी पड़सकता है

डॉ. अरोड़ा, हरीश. (2009), प्रिंट मीडिया लेखन. नई दिल्ली : के. के. पब्लिकेशन.

अरोड़ा जी का मानना है कि एक व्यक्ति से लेकर, परिवार, समाज, देश और विश्व के विकास के लिए सूचना की भूमिका में तेजी से परिवर्तन आ रहा है। सूचना से सम्बन्धित विज्ञान, प्रौद्योगिकी और समाज जैसी कई अवधारणाओं का ऐसे समय में उदय आश्चर्य का विषय तो रहा ही है साथ ही इनके स्वरूप के सम्बंध में विश्व में आज भी विमर्श जारी है। लेखक ने पुस्तक में प्रिंट मीडिया की हर परत को उजागर करने का भरसक प्रयास किया है

रत्नेश्वर. (1998), समाचार एक दृष्टि. पटना : नोवेल्टी एण्ड कम्पनी.

लेखक कहते हैं कि समाचार एक ऐसी विधा है जिसमें निरन्तर बदलाव हो रहे हैं। लेखक ने इस पुस्तक में समाचार के सभी अंगो को - शैली, उसकी विधा और समाचार के विभिन्न प्रकारों को उदाहरण के साथ समझाकर अत्यन्त सरल कर दिया है। इसके साथ ही यह भी बताया गया है कि माध्यम के बदलते ही समाचार का स्वरूप त्वरित ही कैसे बदल जाता है

गुप्ता, अंशु. (10 अगस्त 2015), बुरी खबर का बुरा असर. नई दिल्ली : दैनिक भास्कर.

मनोविशेषज्ञ अंशु गुप्ताका मानना है कि बच्चे का मन अबोध होता है और उस पर संचार की प्रक्रिया का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। नकारात्मक समाचारों का असर सीढ़ी पर गेंद की लुढ़कन की तरह है। एक बार शुरूआत हुई तो फिर गिरते ही जाना है। बच्चों पर नकारात्मक खबरों का असर तेजी से होता है और उस पर प्रतिक्रिया भी तुरंत होती है , जबकि सकारात्मक खबरों का उतनी तेजी से प्रभाव नही पड़ता। ऐसे में हमारा दायित्व है कि बच्चों को भावनात्मक सहारा दें , अच्छे बुरे का फर्क सिखाएं तथा बच्चों को समझाएं कि बाहरी दुनिया में बहुत कुछ सकारात्मक भी है

दीक्षित, कमल. (नवंबर 2012), जीवन मूल्य, बढ़ाएं आत्मविश्वास. इंदौर : मूल्यानुगत मीडिया.

इस लेख मे यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि आत्मविश्वास बढ़ाने के लिए सकारात्मक सोच परमावश्यक है। असंभव को संभव करने काजुनून होना जरूरी है। आत्मविश्वास को बनाने के लिए धारणा का प्रयोग बहुत ही प्रभावशाली तरीका है

द्विवेदी, संजय. (अप्रैल 2015), राष्ट्र के बौद्धिक विकास में भूमिका निभाए मीडिया. इंदौर : मूल्यानुगत मीडिया.

संजय द्विवेदी जी का साफ शब्दों मे यह कहना है कि सकारात्मक भूमिका से राष्ट्र के सम्मुख उपस्थित अनके चुनौतियों के समाधान खोजने की दिशा में मीडिया अभियान चला सकती है। मीडिया का कार्य इस देश की विविधता और बहुलता को व्यक्त करते हुए इसमें एकत्व का सूत्र पिरोना है। यह हमारे देश की ताकत है कि संकट के समय पूरा विश्व एक होना चाहिए। मीडिया को समाज के साथ मिलकर सामाजिक मूल्यों का संरक्षक व प्रेरक बनना चाहिए

गुप्ता, प्रमोद. (9 जनवरी 2015), नो निगेटिव न्यूज. नई दिल्ली : दैनिक भास्कर .

नेगेटिव खबरों से फैली नकारात्मकता को दूर करने के लिए पाठकों को कामयाबी के पथ पर अग्रसर करने के लिए दैनिक भास्कर द्वारा यह पहल की गयी जिसमे कहावत थी – ना नफरत ,ना लूट,ना मारकाट, अब सप्ताह की शुरुआत हो नो निगेटिव न्यूज से। इसके माध्यम से जनता को आशावादी बनाने की दिशा में मीडिया का एक बड़ा प्रयास दिखाई देता है

जैन , ज्योति. (नवंबर, 2014), जीवन को दिशा देती है सकारात्मक्ता. नई दिल्ली : अहा ज़िंदगी.

इस आलेख मे यह बताया गया है कि हमारी सोच की दो दृष्टियाँ होती हैं - पहली नकारात्मक और दूसरी सकारात्मक दृष्टि। फर्क सिर्फ हमारी सोच की प्रणाली का होता है। जब हम ठहर कर जीवन को देखते हैं तो पाते हैं कि हमारा जीवन बहुत सी अच्छी व बुरी घटनाओं से मिलकर बना है । कई बार जीवन मे ऐसी कठिनाई आई कि हमें लगा कि जैसे जीवन का सर्वाधिक कठिन समय यही है ,पर वह बीत गया और आज हम खुश हैं। जीवन भी प्रकृति के नियम के अनुसार चलता है –हर रात के बाद सुबह होती है और हर सुबह के बाद रात। हमे अपनी सोच को सकारात्मक बनाना होगा तब आस पास के समाज मे सकारात्मकता खुद ब

डॉ आलम, अख्तर. (2015), मूल्यनिष्ठ समाज के निर्माण मे जनमाध्यमों का योगदान. जयपुर : ऑल इंडिया मीडिया एडूकेटर कांफ्रेन्स.

मीडिया ने समाज को सकारात्मकता की ओर किस तरह परिवर्तित किया है यह बताने का भरसक प्रयास इस शोध पत्र मे किया गया है। विभिन्न मीडिया संस्थानों की सकारात्मक सोच विकसित करने मे क्या भूमिका रही और उनके दुर्गम प्रयास को जानने का भी प्रयास हुआ है। इस लेख मे यह माना गया है कि पत्रकारिता का मूल कार्य नकारात्मक माहौल मे सकारात्मक ऊर्जा का संचार करना है जिसके लिए पत्रकारों को अपनी कलम का

प्रसाद,राजीव रंजन. (फ़रवरी, 2015), समाचार पत्र –पत्रिकाओं में सजावट और बाजार. नई दिल्ली : जन मीडिया.

इस लेख मे बताया गया है कि किस तरह मीडिया का बाजारीकरण हो रहा है। मीडिया का उपयोग करने वाला हर वर्ग का व्यक्ति है जो अपने अनुसार मीडिया का चयन करता है। परंतु मीडिया के सकारात्मक पहलू को भुलाया नही जा सकता है जो समय –समय पर समाज का सही मार्गदर्शन करता है ओर उसे जागरूक करने का यथासंभव प्रयास भी करता है ।

डॉ. द्विवेदी , आशीष. (2015), पत्रकारिता का मनोविज्ञान : एक अध्ययन. जयपुर: ऑल इंडिया मीडिया एडूकेटर कांफ्रेन्स.

दैनिक भास्कर द्वारा जो गुड न्यूज़ की पहल की गयी है उसे खबरों के मनोविज्ञान से जोड़कर बताया है जो सभी मीडिया संस्थानो के लिए आने वाले समय मे प्रेरणादायी साबित होगी और सकारात्मक खबरों का प्रचार प्रसार अधिक होगा जो समाज के मनोविज्ञान को समझकर उसके विकास मे पूर्णत:

सिंह, ऋषि कुमार. (फरवरी, 2015), सेंसरशिप : नो निगेटिव न्यूज. नई दिल्ली : जन मीडिया,

इसके अंतर्गत यह अध्ययन किया गया है कि किस तरह सकारात्मक खबरों का प्रचार –प्रसार बढ़ रहा है जिसके अंतर्गत दैनिक भास्कर द्वारा सकारात्मक खबरों की ओर की गयी पहल पर प्रकाश डाला गया है। जिसमे पत्रकारिता को विकास की पत्रकारिता से जोड़कर देखा गया है। इसे समाज के सामाजिक , राजनैतिक ,आर्थिक आदि सभी हितों से जोड़कर भी देखा गया है। मीडिया द्वारा ऐसे किसी भी समाचार को स्थान नहीं दिया जा रहा हैं

डोगरा ,भारत. (2014), नई दिल्ली : ग्रासरूट्स पत्रिका, प्रैस इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया , भारत सरकार.

यह पत्रिका समाज के लिए किसी उपहार से कम नहीं है। इसके माध्यम से लगातार समाज के हित व उनके अधिकारों से जुड़े मुद्दे उठाए जाते हैं ,चाहे वह समाज से जुड़ा कोई भी मुद्दा हो या फिर किसी भी वर्ग, समूह ,जाति से हो। भारत डोगरा ने मुख्य रूप से शिक्षा से विमुख बच्चों के मुद्दों पर बल दिया है। उनका मानना है कि जो चीज जहाँ तक पहुँचनी चाहिए उसकी पहुँच वहाँ तक नही है। कहीं न कहीं इसमे मीडिया भी जिम्मेदार है। उसे अपनी ऊर्जा सही दिशा मे लगानी चाहिए। इस पत्रिका मे लगातार सामाजिक हितों से जुड़े मुद्दे उठाए

कर्ण , नीरज. लाइफ पाजिटीव मिशन. (ब्लॉग, फेसबुक)

नीरज कर्ण इस ब्लॉग के माध्यम से लोगों मे एक नए ऊर्जा का संचार कर रहे हैं जिसमे गुड न्यूज़ का विशेष स्थान है जिसपर लोग चर्चा करते हैं जिससे नई- नई बातें सामने आती हैं। इसमे नए विचार , विद्वानों की रचना, कोई नई घटना ,गुड न्यूज़ को ही स्थान दिया जाता है

1.9 शोध प्रविधि

बिना शोध पद्धतियों का इस्तेमाल किए शोध वैज्ञानिक नहीं हो सकता है, ऐसे मे शोध प्रविधियों का इस्तेमाल करना आवश्यक हो जाता है जो इस प्रकार है

अवलोकन :- अवलोकन प्रविधि से अपने शोध विषय की विभिन्न घटनाओं को देखना कि किस प्रकार सकारात्मक सोच विकसित करने मे मीडिया की पहल अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन कर पा रहा है या नहीं। इस प्रविधि मे तथ्यों के संकलन हेतु अध्ययन का दृष्टिकोण तटस्थ एवं निष्पक्ष होता है

अंतर्वस्तु विश्लेषण :- इसके अंतर्गत दैनिक भास्कर और हिंदुस्तान समाचार पत्रों का अंतर्वस्तु विश्लेषण किया गया है

प्रायोगिक अध्ययन :- कुछ पाठकों पर यह प्रायोगिक अध्ययन किया गया है जिससे पाठकों में सकारात्मक व नकारात्मक खबरों के प्रति उनकी समझ एवं समाचारों को पढ़कर उसके प्रभाव को भी जानना आसान हो गया है

सांख्यिकी पद्धति :- सांख्यिकी पद्धति का प्रयोग डाटा के संग्रहण अथवा उसके वर्णन के लिए कियागया है , जिसके आधार पर आकड़ों का संग्रहण, विश्लेषण ,व्याख्या ,स्पष्टीकरण और प्रस्तुति की गई है

साक्षात्कार :- तथ्य संकलन की इस प्रविधि का प्रयोग कर संबन्धित विषय मे वस्तुनिष्ठतालाई गई है इसलिए इसमें विभिन्न मीडिया समूह से संबन्धित व्यक्तियों का साक्षात्कार अत्यंत उपयोगी है। जिसके अंतर्गत विभिन्न मीडिया विशेषज्ञों का साक्षात्कर शामिल किया गया है जो कि उनके निजी अनुभव और विचारों पर आधारित है , जो इस शोध को एक महत्वपूर्ण दिशा दे रहा है

उपकरण :- उपकरण के तौर पर प्रश्ननावली विधि का प्रयोग किया गया है जिसके माध्यम से पाठकों पर पड़ रहे प्रभाव को जानने मे सहायता हुई।